



# 1° सेल्सियस तापमान वृद्धि गेहूं, अन्य फ़सलों की उपज 3-7% घटा सकती है

2022 में, भारत ने मार्च के दौरान अत्यधिक उच्च तापमान दर्ज किया जिस कारण गर्मी की लहरें जल्दी फैल गईं जिनसे उच्च वाष्पीकरण हुआ और नमी का तनाव बना जिन्होंने रबी की फ़सलों, विशेष रूप से गेहूं, पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

कृषि लागत और मूल्य आयोग (सी ए सी पी) ने अपनी 'रबी फसलों के लिए मूल्य नीति: विपणन मौसम 2023-24' में उल्लेख किया है तापमान बढ़ने से गेहूं के दाने पीले पड़े, सिकुड़ गए और समय से पहले पक गए जिस कारण उपज में कमी हुई। इसके अलावा, चना, मक्का और सरसों जैसी अन्य फ़सलें भी अत्यधिक तापमान के कारण प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई हैं।

सी ए सी पी ने कहा कि भारतीय राज्यों में जलवायु संबंधी खतरों का राष्ट्रीय खाद्य आपूर्ति पर संभावित प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जिससे स्थानीय उत्पादन और अंतर-राज्य व्यापार दोनों प्रभावित होंगे। कुछ अध्ययनों में पाया गया कि राज्य की खाद्य आपूर्ति के लिए सबसे बड़ा जलवायु जोखिम बिहार, मध्य प्रदेश और असम में है।

एक शोध अध्ययन के अनुसार, तापमान में 1° सेल्सियस की वृद्धि से गेहूं, सोयाबीन, सरसों और मूंगफली की उपज में लगभग 3-7% का नुकसान होगा।

आयोग ने 2023-24 की रबी मूल्य नीति में उल्लेख किया है कि सन 2100 तक प्रमुख फसलों की उत्पादकता में तापमान में वृद्धि, वर्षा में बदलाव और सिंचाई के पानी में कमी के कारण 10-40% का नुकसान होगा।

बढ़ते तापमान, यानी 34° सेल्सियस से अधिक, के कारण भारत में गेहूं की वृद्धि प्रभावित हो सकती है, और ऐसा ही 2022-23 के रबी मौसम में देखा गया है जब तापमान में वृद्धि के कारण प्रमुख उत्पादक राज्यों में गेहूं की उपज में गिरावट आई।

केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (सी आर आई डी ए), हैदराबाद, के अध्ययन 'गर्मी की लहर 2022 – कारण, प्रभाव और भारतीय कृषि के लिए आगे की राह' में भी भविष्यवाणी की गई है कि जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाले वर्षों में हाल ही की गर्मी की लहर जैसी चरम घटनाएं अधिक बार और गंभीर रूप से घटेंगी।

इसलिए, जलवायु-अनुकूल टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए और साथ ही जलवायु-अनुकूल फ़सलों की किस्मों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करना चाहिए, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकती हैं।